हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-१२ जुलाई, २००९

सम्पादकीय

तीन कलाकारों का निधन

पिछले महीने, विश्व ने तीन अद्भुत कलाकार खो दिये। ये कलाकार थे- प्रसिद्ध सरोद वादक, उस्ताद अक़बर अली खाँ, गायक तथा नर्तक, माइकेल जैक्सन तथा कैंसर से लड़ती 'चार्लीज़ एंजेल्स' टेलीविज़न सीरियल की प्रमुख अमरीकी अभिनेत्री, फ़ाराह फ़ासेट्। उस्ताद अक़बर अली खाँ पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सरोद का जादू विश्व-मंच पर प्रदर्शित किया था। कोलकाता, कैलीफ़ोर्निया तथा स्विटज़रलैण्ड में सरोद-शिक्षा के उनके स्कूल हैं। ८७ वर्ष की आयु में १९ जून को उनका देहांत हो गया।

माइकेल जैक्सन विश्व में अपनी गायन तथा नृत्य की क्षमता के लिये प्रसिद्ध थे। १९८२ में निर्मित उनका एल्बम 'थ्रिलर' आज भी विश्व का सबसे अधिक बिकने वाला एल्बम है। उनके गायन व नृत्य-शैली ने काले-गोरे, जाति-पाँति, देश-विदेश की सीमाओं को तोड़कर सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त की। बालकों से यौन सम्बन्ध के अप्रमाणित आरोपों के कारण उनकी छवि धूमिल हुई और उनकी लोकप्रियता पर बुरा असर पड़ा। १३ जुलाई से वे अपने संगीत व नृत्यों के प्रदर्शनों की एक नयी श्रृंखला शुरू करने जा रहे थे पर इसके पहले कि वे इंग्लैंड में अपना अंतिम शो कर पाते, २५ जून को उनका देहावसान हो गया।

फ़ाराह फ़ासेट अपनी सुन्दरता के कारण प्रसिद्ध थीं। किशोर बालाएँ, उनके बालों की स्टाइल की नक़ल किया करती थीं। उनके मोती जैसे श्वेत दाँत और मुस्कराहट लोगों का मन हर लेती थी। पर सबसे अधिक प्रसिद्धि उन्हें 'चार्लीज़ एन्जेल्स' नामक टेलीविजन सीरियल की प्रमुख अभिनेत्री की भूमिका के रूप में मिली। २००३ में उन्हें कैंसर हो गया। कैंसर से अपनी लड़ाई पर उन्होंने एक वृत्त-चित्र बनाया जो उनके साहस को दर्शाता है। ६२ वर्ष की आयु में फ़ाराह फ़ासेट का २५ जून को देहांत हो गया। तीन कलाकारों का एक साथ गुज़र जाना विश्व के लिये एक महत्त्वपूर्ण क्षति है, जिसकी आसानी से पूर्ति नहीं की जा सकती है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में काव्य-कुंज में कुछ रोचक कविताएँ हैं, तीसरी संस्कृति पर लेख का दूसरा व अन्तिम भाग है। कहानी 'समय शेष' का छठा भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

आधुनिक नारी

- मनीष डब्बास, अमेरिका

तीखे नयन-नक्श लिये तीर-तलवार से
भारतीय महिला कैसे
'यंग लेडी' बन गयी
जींस, पैंट ने
मारी बाजी सूट-सलवार से
बनारस की साड़ी
आज 'शर्ट' कैसे बन गयी
कैसे बनीं नारियाँ अब
कामदेव मूर्तिरूपी चाल सबकी
यूँ टेढ़ी-मेढ़ी कैसे बन गयी
भारतीय संस्कृति को
जिस पर नाज़ था इतना
वह महिला पश्चिम की संस्कृति की
एड़ी कैसे बन गयी

घंटों आईने के आगे बिताती हैं सब
मुँह पर पाउडर, क्रीम की
जैसे जंग हो गयी
जो लज्जा थी कभी भूषण,
नारी श्रृंगार का
आज वही बेढंगी कैसे हो गयी
ढाँप नहीं पाती हैं तन को भली-भाँति
उनकी पोशाक भी दिन-ब-दिन
इतनी तंग कैसे हो गयी
समेटे थी सतरंगी संस्कृति जो
क्षण भर में वह बेरंगी कैसे हो गयी

माइकेल जैक्सन

-सुभाष शर्मा, मेल्बर्न

स्टार तो हज़ारों पर एक ही था सन
सब प्यार से
कहते जिसे थे माइकेल जैक्सन

जब नाचता गाता था,
थिरकता था आसमान
एक एक तारा था
छिड़कता उसपे अपनी जान

माई का लाल माइकेल
और जो का था वो सन
सब प्यार से
कहते जिसे थे माइकेल जैक्सन

चोला उतार काला
क्यों पहना ये गोरा तन
रोशन है तेरे नाम से ही
गोरों का वतन
तेरे ही नाम से हुआ
रोशन उनका हुआ वतन

घर के ही चोर
लूट ले गए हों जिसका धन
सब प्यार से
कहते थे उसे माइकेल जैक्सन

बचपन ही बिक गया तेरा वैभव के
नाम पर
वह हो गया कुर्बान
दवाओं के नाम पर
बचपन जो ढूँढता रहा
बच्चों का बाप बन
सब प्यार से
कहते थे उसे माइकेल जैक्सन

धरती पर 'मून-वाक' करके तूने दिखाया
अलबम भी बैड,बीट-इट तूने ही बनाया
दुनिया के नर्तकों में था
जैको ही नम्बर वन
सब प्यार से
कहते थे उसे माइकेल जैक्सन

तेरे ही दोस्तों ने दगा तुझे दे दिया
तेरी ही दवाओं ने तुझे तुझसे ले लिया
देते सभी विदाई हैं भीगा सभी का मन
सब प्यार से
कहते थे उसे माइकल जैक्सन

आधुनिक मेनका

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

काम की कमान लिये,
'डिस्को' चली हैं सब
नैनों की कटार देखो, बार-बार मारे हैं
नागिन सी लट,
नटखट लट, सट-सट कर
राम जाने कौन सा ज़हर उतारे हैं
नृत्य की भंगिमाएँ भूल गयीं सभी
यहाँ-वहाँ, इधर-उधर हाथ-पैर मारे हैं
भूल गयी गरिमाएँ, लाँघ गयी सीमाएँ
तोड़ डाले इन्होंने तो नियम ही सारे हैं

समानता

समानता की बात
इतने ज़ोर से चली है अब
दुकानों में इन्हें पतलूनें कम पड़ती हैं
छेड़ती हैं कन्हैया को
भरी भीड़ राधा रानी
के प्रति दुर्व्यवहार पर झगड़ती हैं
भेद-भाव के विरुद्ध एकता प्रदर्शन में
ये सब की सब
लक्ष्मीबाई बन कर लड़ती हैं
और कभी खड़ा होना
पड़ जाये इन्हें लाइन में
तब इन्हें पुरुषों की पंक्तियाँ अखरती हैं।

कमी

कहीं न कहीं तो कुछ
कमी भी रही होगी
वरना, महिलाओं की छवि
इस तरह क्यों बिगड़ गयी
भौतिकता की ललक का
सीखा किससे सबक
नैतिकता दिलों में
तिल-तिल कर सड़ गयी

कुछ सवाल

ये भी कहो जब जली चिता पर सती,
तब जलते मांस की गंध
तुन्हें आयी क्या।
खेल रहे थे शिकारी,
खिलौना बना के नारी
तब उस अबला की चीखें
सुनाई दीं क्या
छोटी-छोटी चिंगारी
सुलगा कर हर नारी,
आज एक जलती आग कैसे बन गयी।
फाड़ दिया घूँघट, लाँघ गयी चौखट,
हाथों की चूड़ियाँ
फिर बेड़ी जैसी बन गयीं।
दिल पर ज़रा रखो हाथ,
पूछो अब वही बात,
भारतीय महिला कैसे
'यंग लेडी' बन गयी
भारतीय
महिला.....।

एक दुनिया - अनेकों संस्कृतियाँ (भाग २)

(इस लेख के पहले भाग में आपने तीसरी संस्कृति के बारे में पढ़ा और जाना कि ऑस्ट्रेलिया में विद्यार्थियों को कितनी स्वतंत्रता होती है। इसके विपरीत, भारत में बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है जिससे बच्चों में तनाव बढ़ता है परन्तु छात्रों में आगे के जीवन में आने वाले तनाव और दबाव से निपटने की क्षमता आ जाती है। प्रस्तुत है लेख का दूसरा व अन्तिम भाग-सम्पादक)

-शिंजिनी एलावादी, भारत

ऑस्ट्रेलिया में विद्यार्थियों को अपनी इच्छा से अपने विकल्प चुनने का अवसर दिया जाता है तथा उनकी रचनात्मक रुचियों को भी अत्यन्त बढ़ावा दिया जाता है।

भारतीयों को प्राय: बहुत ही सुरुचिपूर्ण तथा स्नेहिल लोगों के रूप में माना जाता है। उनका साथ सदैव रंग-बिरंगे रंगों और मस्ती से भरा रहता है। आस्ट्रेलिया में जीवन, भारत की तुलना में अधिक सौम्य तथा सरल है। ऑस्ट्रेलिया में रह कर मुझे अपने सभी हरे, नीले, पीले, गुलाबी रंगों के वस्त्रों को काले, सफेद और भूरे रंगों में बदलना पड़ा। ऑस्ट्रेलियाई फ़ैशन में मुझे एकरसता की झलकियाँ दिखाई दी। परन्तु मनुष्य के वस्त्रों को बदलने की अपेक्षा मनुष्य की सोच और मूल्यों को बदलना अधिक कठिन है।

ऑस्ट्रेलिया में रहते हुए, मेरी मुलाक़ात ऐसे कई भारतीय मूल के किशोरों से हुई जो ऑस्ट्रेलिया में ही पले बढ़े थे जब कि उनके माता पिता भारत में भारतीय संस्कृति में पले-बढ़े थे। कभी कभी मैं इन किशोरों को दो संस्कृतियों के बीच संघर्ष में झुलसते हुए देखती थी। वे अपने घर में कुछ और देखते थे और बाहर की दुनिया उन्हें कुछ और ही सिखाती थी। जैसे, छोटे-छोटे पश्चिमी कपड़े पहनना या मित्रों के साथ धूम्रपान करना या मदिरा पीना। यह सब करना हमारी संस्कृति के विरुद्ध माना जाता है। इसीलिए भारतीय माता-पिता सदा अपने बच्चों पर प्रतिबन्ध लगाते रहते थे ताकि वे अपनी संस्कृति की सीमा में बंधे रहें। माता पिता ही अपने बच्चों को संस्कृति की धरोहर सौंपते हैं और उन्हें उनकी जड़ों से जोड़े रखते हैं फिर चाहे वे दुनिया के किसी भाग में क्यों न रहते हों। अपने इन्हीं मूल्यों को, जिसे पश्चिमी दुनिया 'रुढ़िवादी' मानती है, सम्भालते-सम्भालते वे ऑस्ट्रेलियाई संस्कृति की सभ्यता में जीवन व्यतीत करने में कठिनाई का सामना करते हैं। उन्हें अपने लिए एक लक्ष्मण रेखा बनानी पड़ती है जिसके भीतर वे अपने बड़ों के कहे को सम्मान देते हैं तथा अपने जीवन का आनन्द भी उठाते हैं।

(क्रमश:)

अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिये मुफ़्त क़ानूनी सहायता

भारतीय तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों पर बढ़ती हुई हिंसक घटनाओं तथा जातिभेद के मामलों को ध्यान में रखते हुए मेल्बर्न के पश्चिमी उपनगरों की क़ानूनी-सेवा ने अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिये मुफ़्त क़ानूनी परामर्श सेवा का आयोजन किया है। यह सेवा, भेदभाव, पक्षपात, पुलिस शिकायतों तथा अपराध से पीड़ित व्यक्तियों के मामलों में मुफ़्त क़ानूनी परामर्श देगी। यह सेवा नौकरी, किराये तथा यातायात-नियमों की उपेक्षा सम्बन्धी मामलों में भी क़ानूनी सलाह देगी। इस सेवा को प्रदान करने वाले व्यक्तियों में स्वयंसेवक वकील तथा हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, तमिल तथा मलय जानने वाले व्यक्ति भी शामिल होंगे। दूरभाष द्वारा अन्य दुभाषिया सेवाएँ भी उपलब्ध होंगी। 'वेस्टर्न सबर्ब्स लीगल सर्विस' की यह सेवा १ जुलाई से ३० हॉल स्ट्रीट, न्यू पोर्ट पर हर बुधवार को सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक उपलब्ध होगी। पहले से साक्षात्कार का समय नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं है। अधिक जानकारी के लिये, निम्न व्यक्तियों से सम्पर्क कीजिये- सन्मति वर्मा (संयोजिका) दूरभाष - (०४१०)९२३ ०४१, ई-मेल- **sanmati.verma@gmail.com**
मरीका डियास (प्रमुख वकील) दूरभाष - (०४२४) ०५४ ३१४, ई-मेल- **marika_dias@ clc.net.au**

कहानी

समय शेष (भाग ६)*

(इस कहानी के पिछले भागों में आपने पढ़ा कि दूध लेने के स्थान पर किस प्रकार दशरथ बाबू की एक वृद्ध महिला से भेंट हुई। एक बार, जब कई दिन तक दशरथ बाबू नहीं दिखे तो एक दिन सुमित्रा उनके घर पहुँच गई। पता चला कि वे गाँव गये हुए हैं, पता नहीं कब तक लौटें। बातचीत के दौरान, दशरथ बाबू की बहू, निनी ने सुमित्रा को बताया कि दशरथ बाबू के रिटायर होने के दो वर्षों बाद ही उनकी पत्नी चल बसी थीं। उनकी बीमारी में दशरथ बाबू ने उनकी बहुत सेवा की थी। उस बीच वे कभी सोये भी या नहीं। जब देखिए, आरामकुर्सी में उनके पलंग के बगल में बैठे हैं। लीजिये आगे की कहानी पढ़िये -सम्पादक।)

उसी के दरम्यान झपकी आ गई, आँखें थोड़ी देर के लिए लग गईं, बस। दवा-दारू, गंदे कपड़े बदलना, उन्हें खुद साफ़ करना, धोना, सुखाना। वह मुझे गंदा कपड़ा छूने नहीं देते थे। वही थे, जो... बहुत प्यार था दोनों में। बाबूजी की यह दूसरी पत्नी थीं। पहली तो शादी के साल भर बाद ही संसार छोड़ गई थीं। इसीलिए ...."

सुमित्रा की बंधी साँस उच्छ्वास बनकर निकली- "अपना-अपना भाग्य है, बेटी!"

"सोचती हूँ, बाबूजी को कुछ हुआ, तो मैं क्या उतना कर पाऊँगी?"

"चिंता न करो, बेटी! वह महान पुरुष हैं। किसी की सेवा लेने के पहले चलते-चलाते चल देंगे।"

वातावरण पुरानी स्मृतियों से बोझिल हो रहा था।

सुमित्रा जब घर से निकली, तो न जाने कैसी दारुणता से मन भरा था। हाय! जाने कितना समय बीत गया! कुछ पता ही नहीं चला।

घर में पहुँचने पर सुमित्रा की बहू ने उत्सुकता से पूछा-"कहाँ थीं अब तक?"

सुमित्रा कोई जवाब दिए बिना दूध ले कर रसोईघर में गई और गैस जला कर दूध गरम करने लगी। बहू पीठ पर थी- "वह आपको खोज कर बूथ पर से लौट आए हैं। मटरगश्ती के लिए जाना था, तो कह कर जातीं। लोगों को परेशान तो नहीं होना पड़ता।"

- युगल

सुमित्रा प्रतिक्रियाहीन काम में लगी रही।

दशरथ बाबू गाँव से सप्ताह भर बाद लौटे। बहू ने सूचना दी-"वे आई थीं।"

"कौन?"

"आपको खोज रही थीं।"

बहू के होठों को विहंसते देख बोले- "जानूँ भी तो, कौन थीं।"

"आप जान गए हैं कि कौन थीं।" और निनी अंदर चली गई।

दशरथ बाबू को धक से लगा, कहीं सुमित्रा तो नहीं आई हो। उसे भी क्या सूझा! उन्होंने ऊँची आवाज़ में पूछा- "कुछ नाम-धाम बतलाया था उसने?"

निनी सामने आई, तो उसके हाथ में चाय की प्याली थी।

हँसती हुई बोली, "मैंने उनसे पूछा था, तो बोलीं- कहने की कोई ज़रूरत नहीं, वे जान जाएँगे"

प्याली रख कर निनी किचन की ओर वापस मुड़ गई।

दशरथ बाबू ने प्याली हाथ में तो ली, लेकिन होंठों तक ले जाते-जाते रुक गए। सुमित्रा से बोलने-बतियाने का लोग जाने क्या अर्थ ले रहे हैं।

निनी जब फिर इधर से गुजरी, दशरथ बाबू ने पूछा-"बहू, वह क्यों आई थी यहाँ?"

"कौन?" निनी अनजान-सी मन ही मन विहँसी।

"वही, जो आई थी।"

"वह चिंतित थीं कि कहीं आप बीमार-विमार..."

दूसरे दिन मिल्कबूथ पर दशरथ बाबू को देखकर सुमित्रा बोलीं-"चुपचाप कहाँ गायब हो गए थे?"

"हूँ।"

सुमित्रा चुपचाप सोचती रहीं, यह आदमी कितना सहृदय और अंत: उत्सर्गी है! इसने पत्नी को कितने अटूट भाव से प्यार किया था! इस पुरुष को छोड़कर चले जाने का दुख उस बेचारी को स्वर्ग में भी सालता होगा।

दशरथ बाबू ने पार्क में बेंचों पर इधर-उधर बैठे लोगों को एक-एक कर देखा कि कौन-कौन उन दोनों की ओर देख रहा है। वे सुमित्रा से कहना चाहते थे कि तुम मेरे पास आ कर मत बैठा करो। हालाँकि हमारी उम्र किसी रोमांस की नहीं रह गई, लेकिन जाने लोग क्या सोचते हों! परंतु वे कुछ कह नहीं सके।

उसके दो दिन बाद सुमित्रा का बूथ पर आना बंद हो गया। दो-तीन दिनों तक तो दशरथ बाबू ने उधर गहराई से नहीं सोचा। लेकिन कहीं कुछ छूट गया है, खो गया है- यह मन के किसी कोने को कचोटता रहा- क्यों नहीं आ रही सुमित्रा क्या हुआ होगा उसे?

सप्ताह बीता होगा या एक-दो दिन ज्यादा भी हुए होंगे कि एक सांझ सुमित्रा दशरथ बाबू के घर आ गईं। आ गईं, तो रात के नौ बजे तक रुकी रहीं। कुछ देर तक तो वह टी०वी० देखती रहीं फिर निनी के पास रसोईघर में पहुँच गईं। वहीं गुमसुम बैठी रहीं। निनी ने पूछा भी कि कुछ हुआ है क्या माँ जी? तो सुमित्रा दीर्घ साँस लेती हुई बोलीं- "अब क्या होना हवाना है, बेटी! होना तो यही है कि मेरी अर्थी उठे।"

(क्रमश:)

* आजकल के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

सिक्खों के गुरु हरकृष्ण का जन्म-दिवस (२३ जुलाई), रक्षा-बंधन (५ अगस्त), श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (१४ अगस्त), भारतीय स्वतंत्रता-दिवस की वर्षगाँठ (१५ अगस्त), रमज़ान का आरम्भ (२२ अगस्त), गणेश-चतुर्थी (२३ अगस्त)।

सूचनाएँ

१. **महफ़िल-नाइट**, सैफ़ चोपड़ा तथा परिवार द्वारा प्रस्तुत संगीत (शुक्रवार, १७ जुलाई)
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक। सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

२. गोल्डेन होम्स द्वारा प्रस्तुत **संगीत कार्यक्रम 'रंग दे बसन्ती'** प्रसिद्ध गायक **दलेर मेहन्दी के साथ**
तिथि- शनिवार, १८ जुलाई
स्थान - डल्लास ब्रुक्स हॉल, ३०० एलबर्ट स्ट्रीट, मेल्बर्न
आरम्भ समय - रात के ७.०० बजे से।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - गोल्डी (०४२४) १९६ ५०० अथवा निक (०४२०) ३०२ ०४६

३. **संगीत-संध्या** (शनिवार, १ अगस्त)
स्थान - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, ह्वीलर्स हिल, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
समय - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९९४६ २५९५ अथवा (०४०२)०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://www.sharda.org/Events.htm

अब हँसने की बारी है

बैंक से ऋण

अध्यापक (विद्यार्थी से) - तुम्हारे पिता जी ने बैंक से दस प्रतिशत ब्याज पर एक लाख रुपये का ऋण लिया। एक साल बाद जब वे ऋण चुकाते हैं तो बताओ वे कितने रुपये बैंक को वापस करेंगे?

विद्यार्थी (अध्यापक से) - कुछ भी नहीं।

अध्यापक (विद्यार्थी से) - तुम इतना हिसाब भी नहीं जानते?

विद्यार्थी (अध्यापक से) - मैं तो हिसाब जानता हूँ पर आप मेरे पिता जी को नहीं जानते हैं।